घनानंद (1668 से1739)

स्नातक पार्ट 2

Prof रौशन कुमार (हिन्दी विभाग)
जनता कोशी महाविद्यालय बिरौल

घनानंद रीतिमुक्त धारा के श्रृंगारी कवि हैं। इनका जन्म 1689 सभी और मृत्यु नादिरशाह के आक्रमण के समय 1739 इसमें में हुई। यह दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह के यहां मीर मुंशी थे और जाति के कायस्थ थे। यह सुजान नामक वेश्या से प्रेम करते थे एक दिन दरबार के कुचक्रियों नेबादशाह से कहा कि मीर मुंशी साहब गाते बहुत अच्छा है। बादशाह ने इन्हें गाना सुनाने को कहा तो यह टालमटोल करने लगे। तब लोगों

ने कहा कि यह इस तरह ना गाएंगे यदि इनकी प्रेमिका सुजान कहे तब गाएंगे। वेश्या बुलाई गई और तब घनानंद ने उसकी ओर मुंह करके और बादशाह की ओर पीठ करके गाना सुनाया। बादशाह को इनके गाने पर तो प्रश्न हुआ किंतु इनकी बेअदती पर इतना नाराज हुआ कि उससे इन्हें शहर से बाहर निकल जाने का हुक्म दिया तब इन्होंने सुजान से अपने साथ चलने को कहा तो उसने इंकार कर दिया। इन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया और वृंदावन आकर निंबार्क संप्रदाय के वैष्णव हो गए ।घनानंद की कविता में सुजान शब्द का प्रयोग बार बार हुआ है जो कहीं-कहीं कृष्णवाची है तो कहीं सुजान नामक उस वेश्या के लिए है जो इनकी प्रेयसी थी। घनानंद के लिखे 5 ग्रंथों का पता चलता है --1 सुजान सागर 2 विरह लीला 3 लोक सार 4 रसकेलिवल्ली 5कृपाकांड आचार्य शुक्ल के अनुसार इनके अतिरिक्त इनके

कविता और समय के फुटकर संग्रह भी मिलते हैं जिसमें 150 से लेकर 400 तक छंद संकलित है। डॉक्टर नागेंद्र के अनुसार घनानंद के कुल उपलब्ध कविताओं की संख्या 752 है पदों की संख्या 1057 है तथा दोहे चौपाइयों की संख्या 2354 है।घनानंद के विषय में अन्न उल्लेखनीय तथ्य इस प्रकार हैं -----

(1)-प्रेम मार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर तथा जवादानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कोई कवि नहीं हुआ

(2)भाषा पर जैसा अचूक अधिकार घनानंद का था वैसा और किसी कवि का नहीं।(

3) घनानंद उन बिरले कवियों में है जो भाषा की लाक्षणिक पदावली की शक्ति से परिचित है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार भाषा

के रक्षक और व्यंजन की सीमा कहां तक है इनकी पूरी परख इन्हीं को थी ।

(4)घनानंद ने यद्यपि संयोग और वियोग दोनों का चित्रण किया है तथापि इनका वियोग वर्णन अति प्रसिद्ध है। घनानंद के वियोग वर्णन बिहारी की तरह प्रसिद्ध है ।इनके वियोग वर्णन में बाहरी ताप की नाप जोख नहीं है जो कुछ हलचल है वह भीतर की है ।

(5)घनानंद अन्तरबृत्तियो के निरूपक कवि है ।बियोग में हृदय अंतर्मुखी हो जाता है। विरह वेदना में हृदय की पीड छटपटाहट एवं कसक कितनी बढ़ जाती है इसका पता घनानंद के कवित्त सबैये में प्रमुखता से चलता है।

(6)लाक्षणिक मूर्तिमत्ता एवं प्रयोग वैचित्र की जो छटा घनानंद की भाषा में दिखाई पड़ती है वह बाद में आधुनिक काल की छायावादी कविता में

ही उपलब्ध होती है अन्यत्र नहीं ।घनानंद की कविता के कुछ सरस उदाहरण प्रस्तुत है।

अति सूधो. स्नेह को मारग है ,

जहां नेकु सयानप बांक नहीं।।

तहां सांचै चलै तजि आपुनपौ,

वो जिसकेकपटी जो निशंक नही।।

घनानंद प्यारे सुजान सुनौ,

ठत एक तै दूसरों आंक नही।।

तुम कौन सी पाटी पढै हो लला,

मनु लेहुपै देहु छटाँक नही।।

घनानंद को स्वछंदतावादी काव्यधारा का कवि इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने रीति की बंधी बंधाई परिपाटी का अनुकरण ना करके हृदय की स्वच्छ बृत्तियो पर काव्य रचना की।